पुरुषपरीक्षा

(1)

संस्कृत-साहित्य के अन्तर्गत कथासाहित्य का विपुल और सुसमृद्ध भण्डार रहा है। प्राचीनता, लोकप्रियता, रचनाधर्मिता, शिक्षप्रदता एवं उपदेशप्रदतादि की दृष्टि से यह साहित्य बहुमूल्य है। फलतः अन्य भारतीय साहित्य के साथ-साथ विश्वसाहित्य की कथाओं को भी इसने प्रभावित किया है।

संस्कृत कथासाहित्य की महान् परम्परा में चौदहवीं शताब्दी में मैथिलकोकिल महाकवि विद्यापति द्वारा रचित शिक्षाप्रद रोचक कथाग्रन्थ पुरुषपरीक्षा भी एक है। यहाँ पञ्चतन्त्र की परम्परा का पालन करते हुए अत्यन्त सहज, सरल, सरस और मनोरंजक शैली में उपदेश व शिक्षाप्रद रोचक कथाएँ प्रस्तुत की गई हैं। महाकवि ने अपने आश्रयदाता महाराजा शिवसिंह के निर्देश पर इस कथासाहित्य की रचना की थी। ग्रन्थारम्भ में ही महाकवि ने महाराजा श्रीदेवी सिंह के पुत्र तथा अपने आश्रयदाता श्रीशिवसिंहदेव के चिरायु होने की कामना की है -

वीरेषु मान्यः सुधियां वरेण्यो विद्यावतामादिविलेखनीयः।
श्रीदेवसिंहक्षितिपालसूनुर्जीयाच्चिरं श्रीशिवसिंहदेवः॥

यह ग्रन्थ समाजशास्त्रियों, इतिहासकारों, मनोवैज्ञानिकों, राजनीतिशास्त्रियों के साथ-साथ दर्शन एवं साहित्य के लोगों के लिए भी एक अपूर्व कृति है। 'पुरुषपरीक्षा' की कथा चार कथावर्गों में दी गई है - वीरकथा, सुबुद्धिकथा, सुविधकथा और पुरुषार्थकथा।

पुरुषपरीक्षा में सच्चे पुरुष की परख कैसे की जाए - यह बताने के लिए वासुकि नामक मुनि पाराशर नामक राजा को अनेक कथाएँ सुनाते हैं। पुरुष की परीक्षा के विषय में कवि ने ग्रन्थ की भूमिका में चन्द्रातपा नामक नगर में रहनेवाले पाराशर नामक राजा एवं सुबुद्धि नामक

ऋषि की कथा प्रदर्शित की है। यहाँ राजा ऋषि से अपनी विवाहयोग्या अपूर्व सुन्दरी पुत्री पद्मावती के वरचयन के विषय में जिज्ञासा प्रकट की है। प्रश्न पूछने पर ऋषि राजा से योग्य पुरुष वर के पहचान चिह्न को बतलाते हुए कहते हैं कि जो पुरुष वीर हो, सुधि हो, विद्वान् हो तथा पुरुषार्थ करनेवाले हो, वही यथार्थ में पुरुष है, इसके अतिरिक्त पुच्छ-विषाणहीन पशु है -

वीरः सुधीः सुविद्यश्च पुरुषः पुरुषार्थवान् ।
तदन्ये पुरुषाकारः पशवः पुच्छवर्जिताः ॥

पुरुषपरीक्षा इसी तरह की नीतिप्रद व शिक्षप्रद कथाओं का संकलन है। पुरुषपरीक्षा महाकवि की विविध रचनाओं में सुप्रसिद्ध है। अपनी इसी तरह की रचना के कारण ही कवि युगस्रष्टा लोककवि के रूप में स्मरण किये जाते हैं।